अर्हम्

हमारी दुनिया में 'जितने साधक हुए हैं' आत्मा की साधना करने वाले, उन्होंने सत्य की खोज की और सत्य की खोज के द्वारा विश्व के, आत्मा के, जड़-जगत और चेतना-जगत के रहस्यों को जाना। एक अच्छा जीवन जीने की, शांतिपूर्ण जीवन जीने की और संयम के साथ जीवन जीने की जो पद्धति है, वह बहुत महत्त्वपूर्ण होती है। एक प्रश्न बहुत लम्बे समय से रहा है कि धर्म क्या साधु-संन्यासी के लिए है या गृहस्थ के लिए भी है? इस प्रश्न के समाधान में भगवान महावीर ने कहा – 'मैंने दो प्रकार के धर्मों का प्रतिपादन किया–एक गृहस्थ का धर्म, दूसरा साधु-संन्यासी का धर्म।' गृहस्थ के लिए अणुव्रत धर्म और साधु के लिए महाव्रत धर्म। भगवान महावीर ने गृहस्थ धर्म के लिए जो आचार संहिता दी है, वह वर्तमान समस्या के लिए बहुत बड़ा समाधान है। व्रतों की संख्या बारह है। उनमें से कुछ व्रतों के बारे में कहना चाहता हूं। पहला है अहिंसा अणुव्रत। यदि गृहस्थ के जीवन में अहिंसा नहीं है तो वह दूसरों के साथ शांतिपूर्ण जीवन नहीं जी सकता।

गृहस्थ महाव्रती नहीं है, इसलिए वह हिंसा को सर्वथा नहीं छोड़ सकता। महावीर ने एक विवेक दिया– अनावश्यक हिंसा को मत करो, संकल्पपूर्वक हिंसा न करो। आवश्यक हिंसा जीवन यात्रा को चलाने के लिए करनी पड़ती है। आज के युग को कोई कहता है वैज्ञानिक युग, कोई कहता है भौतिक युग, कोई कहता है आर्थिक विकास का युग। यह हो सकता है परन्तु गहराई में जाकर मैंने समझने का प्रयत्न किया, कोई पूछे मुझसे आज के युग की पहचान तो मैं कहना पसंद करूंगा– आज का युग अनावश्यक हिंसा का युग है। जितने निरपराधी लोग अनावश्यक हिंसा में मारे जाते हैं, अतीत में ऐसा कहीं नहीं दिखाई पड़ता। यहां विस्फोट वहां विस्फोट, रेल में विस्फोट, वायुयान में विस्फोट। इसका कोई मतलब नहीं। बदला लेने का कोई अंत नहीं। प्राचीनकाल में युद्ध भी होते थे। उस व्यक्ति को नहीं मारा जाता था जिसके पास शस्त्र नहीं होता था। आज तो निहत्थों व निरपराधों को मारा जाता है।

भगवान महावीर ने एक शब्द दिया– अनर्थदंड वर्जन। अनावश्यक हिंसा का वर्जन करना गृहस्थ धर्म की आचार संहिता का महत्त्वपूर्ण अंग है और वर्तमान की समस्या का बहुत बड़ा समाधान। हम एक व्रत पर और ध्यान दें - इच्छा का परिमाण। संग्रह की सीमा करो। कितना संग्रह करोगे? आखिर सब समाप्त होना है। सीमा इसलिए करो कि तुम्हारी आत्मा ममत्त्व के कलंक से कलंकित न हो। अनावश्यक ममत्त्व एक लालसा होती है। सीमा है तो व्यापार शुद्ध हो सकता है, बाजार शुद्ध हो सकता है।

राजनीति में शब्द चला है शोषण। एक समर्थ आदमी बुद्धिहीन का शोषण कर रहा है। प्रशासन में आनेवाला यदि सीमा तय करे तो भ्रष्टाचार समाप्त हो सकता है। सीमाकरण इस भ्रष्टाचार की समस्या का बहुत बड़ा समाधान है। जब आबादी कम थी, खेती बहुत होती थी, पानी की कमी नहीं थी, उस समय भगवान महावीर ने गृहस्थ धर्म की आचार संहिता का महत्त्वपूर्ण सूत्र दिया – उपभोग परिमाण अर्थात् उपभोग की सीमा करो। गृहस्थ धर्म की आचार संहिता का पालन करना वर्तमान युग की भोगवादी समस्या का समाधान हो सकता है। अनावश्यक हिंसा न हो, अति संग्रह न किया जाये, उपभोग का परिमाण हो, इस पर चिन्तन-मनन करे तो वास्तव में महावीर जयंती मनाने का बहुत बड़ा अर्थ होगा।

श्रीडूंगरगढ़ (राज.) **आचार्य श्री महाप्रज्ञ**